



कहानी



रेगु गुप्ता

मकर-संक्रांति का दिन था. फिजा चहुँ ओर छतों पर तेज बॉल्यूम में बजते शोख फ़िल्मी गीतों और ये काटाच वो काटाच के सम्मिलित शोर से गुंजायमान थी. रंग-बिरंगी पतंगों से भरा नीला आसमान सतरंगा प्रतीत हो रहा था. मेडिकल की प्रवेश परीक्षा नीट की अभ्यर्थी अदिका छत पर अपने सामने किताब खोले हुए उसमें कॉन्स्टेंट करने का प्रयास कर ही रही थी, कि तभी कोई चीज धूप से उसके पीछे आ कर गिर गयी. उसने मुड़ कर देखा, दो तोते किसी के मांझे से चायल हो गिरे पड़े थे. एक बड़ा तोता था और दूसरा नन्हा सा था. उन लहू-लुहान पंखियों को देख कर उसका कलेजा ऊपर को आ गया.

बड़ा तोता बड़ी मुश्किल से अपने पंख फड़फड़ाते हुए नन्हे तोते के निकट जाने का प्रयास कर रहा था. उसने निष्कर्ष निकाला, 'बड़ा तोता शायद उस बेबी पैरेंट की माँ थी.' बड़े होले से उसने पहले छोटे तोते की चोटिल गर्दन और पंखों में लिपटा मांझा निकाला और फिर उसे उसकी माँ के पास रख दिया, और फिर बड़े तोते की घायल गर्दन और पंखों में लिपटा मांझा हटाया और उसे छोटे तोते के पास रख दिया. दोनों की गर्दन से खून बह रहा था. माँ ने नन्हे तोते को अपनी लाल चोंच से सहलाते हुए अपने पंखों में सहज लिया था.

अदिका दोनों तोतों को अपने हाथों में थाम पड़ोसी वेट अंकल के घर दौड़ी गई, लेकिन उन्होंने उससे गरजती आवाज़ में कहा, आज मेरी छुट्टी है, आज मैं किसी का इलाज नहीं करूँगा, और उसके मुँह पर दरवाजा बंद कर दिया.

'उफ, इन चोटिल पंखियों को देख कर भी उनका जी नहीं पिचला?'

अदिका घर से अपना फर्स्ट एड बॉक्स ले आई और दोनों पंखियों को मरहम-पट्टी करने लगी.

गुरु माँ

कुछ ही देर में उसने दोनों चिड़ियाओं के घाव साफ कर उनपर एन्टीसेप्टिक मरहम लगा दिया और उनके सामने बाजरा और पानी के बर्तन रख दिए, लेकिन बहुत देर तक दोनों का ही खून बहना बंद नहीं हुआ और कुछ ही देर में दोनों पक्षी निढाल हो मर गए.

'कशा... डॉक्टर अंकल अगर उनका इलाज कर देते तो दोनों पंखी आज जिंदा होते, कोई डॉक्टर इतना इन्सैसिटिव कैसे हो सकता है?' अति संवेदनशील अदिका को यह सवाल मथनी सा मथ रहा था. उसे एक टुक देखती उनकी उदास नज़रें मानो उसके जेहन में फीज हो गईं.

झर-झर बहती आँखों से उसने दोनों मृत पंखियों को अपने बगीचे के एक कोने में दफना दिया और मन ही मन शपथ ली, मैं वेटरनरी डॉक्टर बनूँगी. इन बेजुबान जानवरों की सेवा करूँगी.

अदिका नीट एंजाम में बैठी और नियत वक्त पर उसका परिणाम भी आ गया. वह बहुत अच्छी पोजीशन लाई जिसको वजह से उसे शहर के बेस्ट मेडिकल कॉलेज में एडमिशन मिलना था.

उसके माता-पिता बेहद खुश थे. उसके पिता ने उससे कहा, अदिका बेटा, तुमने चाकई बहुत मेहनत की और तुम्हारी लगन रंग लाई है. आई एम प्राउड ऑफ यू बच्चे, कहते हुए उन्होंने उसे अपने सीने से लगा लिया.

माँ उससे बोली, बेटा, तुमने हमारा नाम रोशन कर दिया. सच में, आई एम प्राउड ऑफ यू. मेरी बेटो अब डॉक्टर बन जाएगी, कितना अच्छा लगेगा जब कोई पूछेगा, आपकी बेटो क्या करती है? और मैं कहूँगी मेरी बेटो डॉक्टर है.

उफ, मेरी बेटो ने मेरी दिली हसरत पूरी कर दी. कहते हुए उन्होंने अदिका को अपने कलेजे से लगा लिया.

पूरा घर उसकी इस नायाब सफलता पर मगन था, लेकिन अदिका के अंतरमन

में कुछ और ही चल रहा था. वह लैप टॉप पर अपना रिजल्ट फिर से देख रही थी, लेकिन सामने स्क्रीन पर दोनों तोतों की धुंध, आँसु बहाती हताश आँखें मानो फीज हो गई थीं जैसे उससे कह रही हों, 'तुम्हें अपनी प्रॉमिस पूरी करनी है, हमारे लिए कुछ करना है', और मन ही मन यह ठानते हुए कि उसे उन बेजुबान प्राणियों की आवाज़ बननी है, उनके लिए कुछ अहम् करना है, वह बोल पड़ी थी, पापा, मैं वेटरनरी डॉक्टर बनूँगी. मैं मूक हेल्पलेस एनीमल्स की सेवा करना चाहती हूँ.

क्या, तुम पागल तो नहीं हो गई हो जो वेटरनरी डॉक्टर बनना चाहती हो? अरे, तुम किस्मत वाली हो जो पहली बार में ही तुम्हें सिटी के बेस्ट मेडिकल कॉलेज में एडमिशन मिल रहा है.

पापा, प्लीज, आपको पता है, मुझे बचपन से इन बेआवाज़ एनीमल्स की सेवा करने का पैशन है. आप तो हमेशा से ही कहते हैं, हर इंसान को अपना पैशन जीने का राइट है, तो अब आप मुझे इसके लिए क्यों मना कर रहे हो? बेटा, अपना ये पैशन तुम डॉक्टर बन कर ही पूरा कर सकती हो. उसके लिए मैं कभी मना नहीं करूँगा, जितना चाहे एनीमल्स की सेवा करो, लेकिन हाँ, मैं तुम्हें मेडिकल की सीट मिलने के बावजूद वेटरनरी डॉक्टर बनने की अपनी बेवकूफी भरी तमना कभी पूरी



नहीं होने दूँगा. ये मेरी जिद है. उसको माँ ने भी पिता की बात दोहराई और आखिरकार अदिका को अपने पैरेंट्स की इच्छा के आगे चुटने ठेकने पड़े और उसने मेडिकल कॉलेज में एडमिशन ले लिया.

काल पखेरू अपनी ही गति से उड़ान भरता गया. उसकी पढ़ाई पूरी हुई और वह डॉक्टर बन कर एक बहुत नामचीन अस्पताल में नौकरी करने लगी.

वक्त के साथ उसका असहाय पशुओं की सेवा करने का जज्बा बढ़ता ही गया था और वह शाम को अपने पूरी समय में एक जानवरों के हॉस्पिटल में उनकी वॉलंटरी सेवा करने जाने लगी थी.

उस दिन मकर संक्रांति थी. अदिका अपनी छत पर चढ़ी हुई चारों ओर उड़ती रंग-बिरंगी पतंगों के बीच पतंगबाजी का लुत्फ उठा रही थी, कि तभी उसका फोन बजा.

हेलो, अदिका, पापा को शायद हार्ट अटैक आया है. वो सीने में तेज दर्द से तड़प रहे हैं. तुम प्लीज फौरन घर आ जाओ. पड़ोस के वेटरनरी डॉक्टर अंकल के बेटे का फोन था.

अदिका तुरंत अपना बैग और हार्ट अटैक की कुछ मेडिसिन्स ले कर उनके घर भागी और उसने उन्हें कुछ मेडिसिन्स दीं और इंजेक्शंस लगाए और फिर एम्बुलेंस में उनके साथ अपने अस्पताल गईं.

सुबह से रात हो आई थी और अदिका सतत पूरे उपचार के दौरान उनके पास रही आईं.

तबियत संभलने पर उन्होंने भीगी आँखों और भराए गले से अदिका का हाथ थामते हुए उससे कहा, बेटा, मैंने तुम्हारा साल भर का ल्यूहारा बर्बाद कर दिया. मुझे आज तक याद है, मैंने बरसों पहले आज के ही दिन अपने झूठे गुरू में तुम्हारे मुँह पर अपना दरवाजा बंद कर दिया था. मैंने अपनी शपथ का मान भी नहीं रखा. मैं तुम्हारा अपराधी हूँ. मुझे माफ कर दो बेटा.

अरे अंकल, यह आप क्या पुरानी बात ले कर बेटे गए? आप स्ट्रेस न लें. नहीं तो आपको तबियत फिर से खराब हो जाएगी. मुझे वाकई मैं कुछ याद नहीं. बिटिया, पहले बताओ, तुमने मुझे माफ किया या नहीं? जब तक तुम मुझे माफ नहीं करोगी, मेरे दिल पर भारी बोझ रहेगा. बेट अंकल ने उसके सामने हाथ जोड़ते हुए कहा.

विकास by बड़े भाई नदी पर नाव हमें क्या सिखाती है



संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक चक्रवात/स्कूल ट्रेनर

छोटे भाई हमारे चारों ओर हमारे लिए सन्देश बिखरते हैं. हमारे चारों ओर स्कूल खुला है या यू कहिए कि हम हर समय स्कूल के ही भीतर हैं। अब हम पर है कि हम सीखें या न सीखें। उदाहरण के लिए आपने नदी पर तैरती नाव देखी होगी। सहज दृष्टि से देखें तो वह नाव बस किसी को जलमार्ग से जाने का साधन मात्र है लेकिन यदि सीखने के भाव से देखें तो यह जल में तैरती नाव हमारे लिए बड़े संदेश रखती है। आज वाही कुछ सन्देश आपके साथ साहित्य जगत् ला रहा है, ताकि अब जब आप नाव देखें तो आपको कुछ जीवन के लिए दिशा मिले.

नदी पर नाव हमें जीवन के दो महत्वपूर्ण सबक सिखाती है. आइए समझते हैं।

पहला सबक संतुलन.

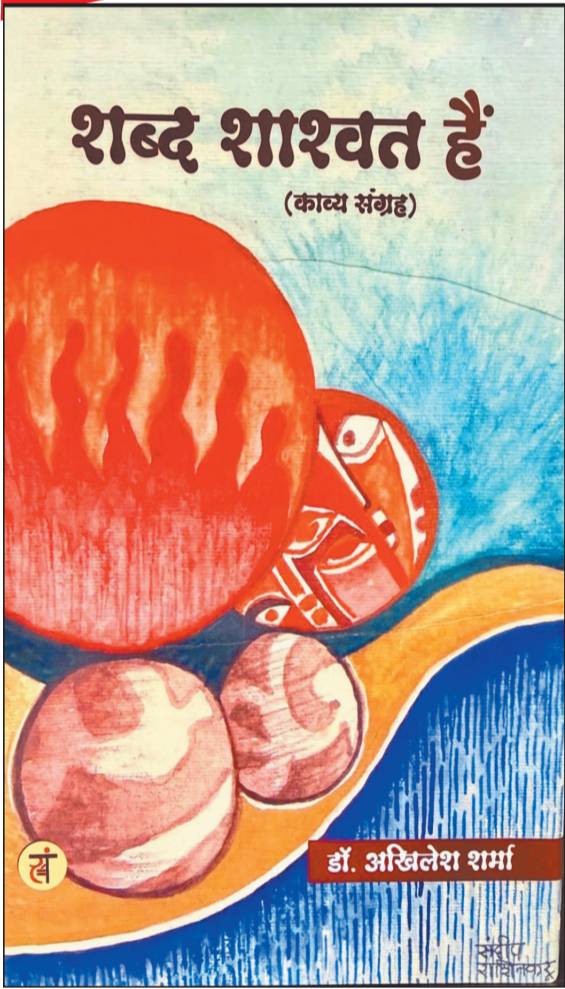
छोटे भाई नदी में लहर होती है कभी छोटी तो कभी बड़ी. नाव इस पर अपना संतुलन बिखरते हुए अपने लक्ष्य पर पहुँचती है हमें भी जीवन के उतार चढ़ाव की नदी से नाव की तरह संतुलन बनाते हुए यानि बिना परेशान हुए चलते रहना चाहिए. कभी परिस्थिति अनुकूल होगी तो कभी प्रतिकूल. पपर तभी होने जब संतुलन होगा.

दूसरा सबक लक्ष्य.

छोटे भाई नदी में नाव या तो डूबेगी या दिशाहीन होकर कहीं भी भटकेंगी यदि हम चप्पू से काम न लें और चप्पू हमने तभी कहीं पहुँचा सकता है जब हमें पता हो हमें किस ओर जाना है. वर्ना चप्पू के चलने का कोई अर्थ नहीं. हमें इससे सीखना चाहिए कि हमारे पास नाव कि तरह जीवन को भी एक लक्ष्य देना चाहिए जिससे हमारे प्रयास का चप्पू हमें उस लक्ष्य तक पहुँचा सके. वर्ना फिर प्रयास व्यर्थ है.

तो यह दो सबक आपको समझ आ गये होंगे. जीवन को एक निश्चित दिशा ओर उस ओर बढ़ते हुए संतुलन ही उंचा बना सकते हैं। बस यही कहना था, धन्यवाद

पुस्तक समीक्षा



डॉ. अखिलेश शर्मा

डॉ. अखिलेश शर्मा के शाश्वत शब्दों की काव्य यात्रा



योगेश कुमार दुबे

समीक्ष्य पुस्तक में रचनाकार ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा से अपनी भावनाओं को रचना का प्रयास किया है. कवि सकारात्मकता के साथ नई सोच की कल्पना करता है. इस संदर्भ में अल्बर्ट आइंस्टीन का कथन याद आता है कल्पना ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि नवाचार का जन्म कल्पना से ही होता है. साहित्यिक कल्पना की सुंदर प्रस्तुति काव्य यात्रा को शब्द शाश्वत हैं के रूप में साकार कर रही है.

बाल रोग चिकित्सक डॉ. अखिलेश शर्मा ने अपने प्रथम काव्य संग्रह में शामिल कविता %शब्द और पंचतत्व% में अपने शब्दों को पंचतत्व में समाहित कर शब्दों को जीवन देकर शरीर और आत्मा की व्याख्या को जन्म दिया है, जो काबिले तारीफ है. काव्य संग्रह में कलम की ताकत का उल्लेख भी है इसी कारण कवि शाश्वत रूप में परिलक्षित है. सूरज को विधाता से बड़ा बताकर उसके अस्तित्व को एक कविता में उसके जलने के प्रति समर्पण भाव की अभिव्यक्ति स्तुत्य है.

भूख, शांति, युद्ध, भाईचारे व प्यास की चिंता कर एक चिकित्सक बहा दो प्रेम की नदियां %के माध्यम से अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करता है, और आशाश्रित हैं कि हर पथ के मुसाफिर को यदि राह दिखाई जाए तो वह भटक नहीं सकता.

वर्तमान समय में आदमी अपने स्वार्थ के कारण इतना गिर चुका है कि वह अपनों के खून से होली खेलने और धर्म के नाम पर ठेकेदार बना बैठा है. आदमी के चेहरे को पाठकों के सामने उनकी एक कविता आदमी ला रही है. खिलौने और गुड़िया कविता में पुराने खिलौने की जगह पर आधुनिक खिलौने के दर्शन और कैसी गुड़ियाएँ हैं? में वर्तमान दौर के सबसे दुखद और चुनौतीपूर्ण परिदृश्य पर कलम ने समाज से प्रश्न किया है. मासूम बच्चियों की व्याथा को कवि ने पाठक के हृदय को झकझोर दिया है.

बेटो दोनों कुलों को रक्षित कर एक पुल बनाकर दो परिवारों के मिलन का सुखद मार्ग बनाती है, इसीलिए दोनों कुलों की शान है, यह उनकी बेटो कविता कहती है.

कलम की ताकत में नैतिक साहस को बढ़ाने की दिशा में कलम के योगदान से समाज के लोगों को जागरूक करती कविता आज के डिजिटल समय में लिखने के महत्व का दर्शन प्रकट करती है.

कोई गीत गुनगुनाएँ कविता में रिश्तों को ईमानदारी से निभाने और सड़क पर लड़की की

चीख को दरिंदों से मुक्त कराने के भाव के साथ एकता की मिसाल व गाँव के चौपालों को पहले जैसा सजाने की कल्पना काबिले तारीफ है.

संस्कार के माध्यम से संस्कार विहीन आजकी पीढ़ी पर कवि हृदय की चिंता समझी जा सकती है. संस्कारवान होना लड़कियों के साथ लड़कों को भी जरूरी है तभी समाज में समरूपता आ सकती है. जिंदगी के सार% में प्यार की सुंदर अभिव्यक्ति का दर्शन है. आज के दौर में प्रेम की ही आवश्यकता है. जब स्नेह के बंधन अटूट होंगे तो हृदय में अपने आप ही चारों धाम के दर्शन होंगे.

हनुमान चालीसा को हाइकु में लिखना अपने आप में एक उपलब्धि है.

अपनी कविता की शतक पुस्तक में पूर्ण करने के बाद कवि ने अपने इन्दौर को एक सशक्त शहर के रूप में स्थापित होने की कल्पना की है. सभी कविताएँ रोचक सीधी और सरल भाषा में होने से मानस पटल पर छाप छोड़ती हैं.

बाल रोग विशेषज्ञ चिकित्सक ने शरीर के तापमान को देखते हुए कविताओं का सृजन किया है, जो शारीरिक पीड़ा और आत्मा की अनुभूति को उर्जा और रोशनी प्रदान करती हैं.

पुस्तक- शब्द शाश्वत हैं
लेखक- डॉ. अखिलेश शर्मा
प्रकाशक- संस्मय प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य- 375 रुपये

मैं चिंता की गोद में भी गीत गाना जानता हूँ..

नाश में निर्माण की वीणा बजाना जानता हूँ. संकटों के मध्य भी मैं मुस्कुराना जानता हूँ. मौत को आना है आए मुझको उसका भय नहीं. मैं चिंता की गोद में भी गीत गाना जानता हूँ.

ये पंक्तियाँ साहित्यकार, चिंतक और कवि अजहर हाशमी जी की हैं. ये केवल काव्य पंक्तियाँ नहीं हैं बल्कि कह सकते हैं जीवन के अंतिम क्षणों में जिया उनका जीवन दर्शन है. प्रो. हाशमी ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता रहे. दूसरों के भविष्य को पढ़ने वाले हाशमी जी ने अंतिम समय में जब उन्हें घर से अस्पताल के लिए लाया जा रहा था तब उन्होंने स्वयं के लिए भविष्यवाणी करते हुए कह दिया था कि यह उनके जीवन की अंतिम यात्रा रहेगी. 5 जून को जब मैं, स्वयं उनका स्वास्थ्य पढ़ने अस्पताल गई तब उन्होंने मुझ से कहा कि आज से अधिकतम 4 या 5 दिनों की और मेरी सांसे हैं, और ऐसा ही हुआ.

श्रद्धेय हाशमी सर सुफी परम्परा के संवाहक रहे, और श्रीमद भगवद गीता के चिंतन को उन्होंने अपने जीवन में उतारा. इसलिए ही वे गीता मनीषी कहे जाते हैं.

श्रीमद भगवद गीता के दूसरे अध्याय में भगवान श्री कृष्ण स्थितप्रज्ञ व्यक्ति के लक्षणों को बताते हुए कहते हैं

संपादकीय बोर्ड
प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

13 जनवरी प्रो. अजहर हाशमी जी की जयंती पर पुण्य स्मरण

कि ऐसा व्यक्ति जो जीवन की विपरीत परिस्थितियों में भी शांत और स्थिर रहता है, वही स्थितप्रज्ञ है.

ऐसे ही स्थितप्रज्ञ अवस्था को प्राप्त हाशमी सर केंसर जैसी गंभीर बीमारी अपने मन, बुद्धि, मस्तिष्क और भावनाओं को नियंत्रित और स्थिर रख अंतिम समय में भी शिष्यों से ज्ञान, धर्म, दर्शन और साहित्य पर चर्चा करते रहे. स्वयं उनका इलाज करने वाले डॉक्टर भी उनके इस आत्मबल को प्रणाम करते हुए कह रहे थे कि केंसर को इस अंतिम अवस्था में हाशमी जी के शरीर की आंतरिक प्रणाली ने अधिकांशतः काम करना बंद कर दिया है लेकिन यह हमारे लिए भी आश्चर्य का विषय है कि वे कैसे इतनी मानसिक स्थिरता को बनाए रखे हुए हैं. आत्मीयता और अनपत्न्य का भाव प्रो. अजहर हाशमी जी के व्यक्तित्व का चुंबकीय गुण था, इसलिए जो भी उनके सम्पर्क में आया फिर वह हमेशा के लिए उनसे जुड़ गया. इसका प्रमाण है हम सब शिष्य, विद्यार्थी तो लंबे समय से उनके सांख्यिक में रहे इसलिए हम सभी का हाशमी सर के प्रति श्रद्धा भाव और भावनात्मक जुड़ाव स्वाभाविक था, लेकिन हाशमी सर का इलाज करने वाले डॉक्टर भी उनका इलाज करते हुए उनके उदारतापूर्ण व्यवहार से ऐसे प्रभावित हुए कि वे भी उनके प्रति श्रद्धा भाव से भर उठे. ऐसे ही हमारे रतलाम शहर के प्रसिद्ध डॉक्टर अरुण पुरोहित जो कि हाशमी सर का

इलाज कर रहे थे जब उन्हें जांच रिपोर्ट से मालूम हुआ कि हाशमी सर को केंसर है तब उन्होंने हाशमी सर की इतने समर्पित भाव से सेवा की कि ऐसा लग रहा था वे हाशमी सर के डॉक्टर नहीं बल्कि पुत्र या शिष्य हो. वे हंसते हुए हम सभी से कहते थे कि आप सब तो हाशमी सर के शिष्य हैं मैं तो उनसे अभी जुड़ा हूँ. मैं 10 जून, सुबह लगभग 11.30 बजे का वह मार्मिक दृश्य जब श्रद्धेय हाशमी सर अपनी अंतिम सांसे ले रहे थे, तब डॉ. हाशमी सर ने अपने जीवन में जो कुछ भी कमाया उसे समाज के लिए ही खर्च किया. कुछ भी संचय नहीं किया. फकीर सा जीवन जिया. इसलिए इलाज के खर्च को लेकर उन्हें चिंता सता रही थी. क्योंकि एक से डेढ़ महीने वे आईसीयू में रहे थे.

तब अपने शिष्यों के लिए जीवन समर्पित करने वाले हाशमी सर के लिए उनके शिष्य, और जिस अस्पताल में वे उपचाररत थे उस अस्पताल के संचालक श्री राजेश



देखो! जा ठंडी.....



प्रोफेसर प्रज्ञा मिश्रा
संस्कृत विभाग म.गं. विश्वकूट रामोदय
शिवविद्यालय, विश्वकूट (म.प्र.)

देखो! जा ठंडी, बहुते घमंडी. पागडंडी में छाया, कोहरे की मंडी.. जाड़े की ओस तो, ऊपर उड़त भाप. गरम पानी खील, जैसे जल है उड़त.. पानी में डार हाथ, बहुते सनात. कपकपी मानुष खाँ बहुते है सतात.. देखो! जा ठंडी, बहुते घमंडी. पागडंडी में छाया, कोहरे की मंडी.. बच्चा स्कूलन में, कैसे पढ़न जात. इनखाँ देखो छुट्टी, बहुते इफरात.. सूट में जा ओस, भीतर बैठ जात. स्कूटर में जा जांडी, घूमन है जात.. देखो! जा ठंडी, बहुते घमंडी. पागडंडी में छाया, कोहरे की मंडी.. घर के जे पौधे, छुपत-छुपत जात. तुलसी खाँ ठंडी, नहीं है पुसात.. भोरे औ तितली, नैयाँ दिखात. कोयल बिन बगिया, ज्यादे लजात.. देखो! जा ठंडी, बहुते घमंडी. पागडंडी में छाया, कोहरे की मंडी.. कंडा और लकरी, सीत में नहात. चूल्हो औ गुंड्या, कैसे जर पाए.. कोऊ बरो चूल्हो, गकड बनाए. भर्ता, गुड, चटनी, सबे खाँ खबाए.. देखो! जा ठंडी, बहुते घमंडी. पागडंडी में छाया, कोहरे की मंडी..

